इकाई 27 ग्रामीण वर्ग तथा जीवन शैली

इकाई की रूपरेखा

27.0 उद्देश्य

परम्परागत रूप से भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा इसकी अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है। इसलिए भारतीय समाज की जानकारी प्राप्त करने के लिए ग्रामीण वर्गों का अध्ययन आवश्यक है। इस इकाई के अध्ययन से आपको निम्नलिखित बातों की जानकारी होगी :

- 16वीं से 18वीं शताब्दी के बीच गांवों में निवास करने वाले वर्गों की;
- उनकी जीवन शैली तथा जीवन यापन के स्तर की; और
- ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक संस्थाओं और प्रथाओं की।

27.1 प्रस्तावना

भारत एक ग्रामप्रधान देश है। आज भी इसकी अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है। भारत में आज की तुलना में मध्यकाल में गांवों में निवास करने वाली जंनसंख्या निश्चित ही अधिक रही होगी क्योंकि औद्योगिक उत्पादन केवल कारीगर उत्पादों और हस्तशिल्प तक सीमित था तथा अधिकांश जनसंख्या के लिए रोजगार का प्रमुख स्रोत कृषि उत्पादन ही था। अब प्रश्न यह उठता है कि उस समय के गांवों में रहन-सहन की पद्धति क्या थी ? इस बड़े निम्नलिखित प्रश्न पर विचार करने से निम्नलिखित प्रश्न सामने आते हैं :

- क्या ग्रामीण समाज समरूप था, या विभिन्न वर्गों से मिलकर बना था ?
- इस समाज में उत्पादन का संगठन क्या था? इस समाज के अंतर्संबंधों की प्रकृति क्या थी ?

इस इकाई में हम उपरोक्त प्रश्नों की चर्चा 16वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य हुए विकास के परिप्रेक्ष्य में करेंगे।

27.2 ग्रामीण समाज की संरचना

जैसा कि आपने ऊपर पढ़ा भारतीय समाज की आधारभूत इकाई गांव था। एक गांव की निम्नलिखित प्रमुख विशेषतायें थी :

प्रत्येक गांव परिवारों के एक समूह से मिलकर बनता था, जिनमें अपने रहने के लिए घर और कृषि योग्य भूमि के स्वामित्व के प्रश्न पर हम पहले ही खंड 5 की इकाई 17 में चर्चा कर चुके हैं। गांवों के अधिकांश निवासी किसान थे। ग्रामीण जनसंख्या में कृषक एक ऐसा वर्ग था जिसके उत्पादन पर सभी ग्रामीण वर्गों (साथ ही शहरी भी) का अस्तित्व निर्भर था। यह कृषक वर्ग सामाजिक प्रतिष्ठा और धन के असमान वितरण के आधार पर वर्गों में बंटा हुआ था। धनी किसान (जैसे **खुद काश्त, घरूहल** और **मिरासदार**) तथा निर्धन किसान (**रेजारिआया, पाल्ती** तथा **कुन्बी**) में बंटे थे। गांव में निवास के आधार पर गांव के स्थायी निवासी (**मिरासदार, थलकर**) तथा अस्थायी निवासियों **पाईकाश्त, ऊपरी** में विभाजित थे। जातीय तथा गोत्रीय संबंधों के आधार पर भी कृषक समाज में विभाजन थे।

गांवों में कृषकों के अतिरिक्त कारीगर और कामगार तथा मजदूर समुदायों की एक बड़ी संख्या भी निवास करती थी। ग्रामीण समाज के इन समुदायों में बुनकर, कुम्हार, लोहार, बढ़ई, नाई, तथा धोबी प्रमुख थे। यह समुदाय ग्रामीण समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। अक्सर यह कृषि उत्पाद में मजदूर के रूप में भी कार्य करते थे।

गांवों में कृषकों के ऊपर ग्रामीण जनसंख्या का एक अन्य वर्ग निवास करता था, जो भू-राजस्व में विशेष उच्चाधिकार रखता था, इन्हें **जमींदार** के नाम से जाना जाता था। इस वर्ग के लोग कुल कृषि उत्पादन में से एक भाग प्राप्त करते थे। इस वर्ग के संघठन और विशेषाधिकारों के विषय में आप खंड 5 की इकाई 17 में विस्तार से पढ़ चुके हैं। यहां केवल यह बताना पर्याप्त होगा कि मध्यकालीन शासकों ने इस ग्रामीण वर्ग (**जमींदार**) को राजस्व वसूली के लिए राज्य के सहायक के रूप में स्वीकार किया था। इस सेवा के बदले इन **जमींदारों** को वसूले हुए राजस्व में से एक निश्चित भाग प्राप्त करने का अधिकार था। एक सामाजिक वर्ग के रूप में **जमींदार** भी जातीय और स्थानीय संबंधों के आधार पर विभाजित थे।

27.3 जीवन स्तर

मध्यकालीन भारत का ग्रामीण समाज वर्गों में बंटा हुआ था। अत: एक ही गांव की जनसंख्या में भी काफी असमानतायें थी। हमारे स्रोत इन असमानताओं की अधिक जानकारी नहीं देते और ग्रामीण समाज को एक समरूपी इकाई के रूप में देखते हैं। इस भाग में हम उस काल के स्रोतों में उपलब्ध सीमित संदर्भों के आधार पर तत्कालीन ग्रामीण समाज के विभिन्न पक्षों पर विचार करेंगे।

27.3.1 वस्त्र

मुगल काल में ग्रामवासियों के पास सीमित वस्त्रों की उपलब्धता उनकी गरीबी का प्रमाण है। ग्रामवासियों के वस्त्रों की चर्चा करते हुए बाबर कहता है कि वे अपने शरीर के मध्य भाग को सिर्फ एक कपड़े (लूंगी) से ढकते हैं। अन्य यूरोपीय यात्री भी इसकी पुष्टि करते हैं परन्तु साथ में यह जानकारी भी मिलती है कि जाड़े के मौसम में वे रूई भरे ढीले कोटनुमा वस्त्र तथा टोपी भी पहनते थे।

महिलायें अधिकांशत: सूती साड़ी पहनती थीं। ब्लाऊज में कई प्रकार की क्षेत्रीय विभिन्नतायें थीं। मालाबार के इलाके में महिलायें (तथा पुरुष भी) कमर के ऊपर कुछ नहीं पहनती थीं। पूर्वी भारत में भी ब्लाऊज नहीं पहना जाता था। परन्तु कुछ अन्य क्षेत्रों में ग्रामीण स्त्रियां चोली या अंगिया पहनती थीं। कुछ पश्चिमी और मध्य क्षेत्रों में स्त्रियां साड़ी के स्थान पर लहंगा और शरीर के ऊपरी भाग में ब्लाऊज पहनती थीं।

ग्रामीण वर्गों में पांव में जूते पहनने का रिवाज लगभग नहीं था। संभवत: केवल गांव के धनी वर्ग ही जूते पहनते थे। इतिहासकार सतीश चन्द्र हिन्दी कवियों, सुरदास और तुलसीदास की कृतियों के आधार पर बताते हैं कि शायद जूते के लिए **पनही** और **उपनाहा** शब्द का प्रयोग होता था (**कैम्ब्रिज इक्नॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया**, खंड 1, पृ. 460)।

27.3.2 रहन-सहन और आवास

ग्रामीण जनसंख्या का अधिकांश भाग मिट्टी के बने तथा फूस की छतों वाले घरों में रहता था। सामान्यत: यह एक कमरे वाले घर होते थे। पेल्सर्ट नामक डच यात्री ने, जो जहांगीर के काल में भारत आया था, ग्रामीण घरों का सजीव चित्रण किया है। नीचे उसका विवरण दिया जा रहा है :

> "उनके (ग्रामवासियों के) घर मिट्टी के बने हुए हैं जिन पर फूस की छत है। घरों में फर्नीचर नहीं या बहुत कम हैं। कुछ थोड़े से मिट्टी के बर्तन होते हैं, जिनमें पानी रखा जाता है और खाना पकाते हैं। केवल दो पलंग होते हैं। एक पुरुष के लिए और दूसरा स्त्री के लिए .... बिस्तर के नाम पर केवल एक या दो चादरें होती हैं जो ओढ़ने और बिछाने दोनों के काम आती हैं। गर्मी के मौसम में तो इनसे काम चल जाता है परन्तु जाड़े की ठंडी रातें अत्यंत कष्टदायक होती हैं। जाडों में स्वयं को गर्म रखने के लिए दरवाजे के बाहर गोबर के कंडे जलाते हैं क्योंकि घरों के अंदर आग जलाने के लिए आतिशदान और चिमनी नहीं होते हैं। (**फ्रेंकोस, पेल्सर्ट, जहांगीर्स इंडिया,** अनुवाद डब्लू. एच. मोरलैंड तथा पी. गेल, दिल्ली, 1925)।"

स्थानीय वस्तुओं और सामान की प्राप्ति के आधार पर ग्रामीण घरों में काफी क्षेत्रीय भिन्नतायें होती थीं। बंगाल में झोंपड़ी बनाने के लिए बांसों और आसाम में लकड़ी, बांसों और फूस का प्रयोग किया जाता था। कश्मीर में लकड़ी के घर बनते थे। उत्तर और मध्य भारत में घर बनाने का प्रमुख सामान मिट्टी और भूसे का मिश्रण था। दक्षिण में झोंपड़ियां बनाने के लिए ताड़ की पत्तियों का प्रयोग होता था। जहां एक ओर गरीबों के घरों में उनके पशु और वे स्वयं एक साथ रहते थे वहीं दूसरी ओर गांव के धनी वर्ग कई कमरों वाले पक्के घरों में रहते थे। इन घरों में कई कमरों के अतिरिक्त अनाज रखने के लिए अलग स्थान और चार दीवारी से घिरे आँगन भी होते थे।

27.3.3 खान-पान

भारत के अधिकांश भागों में अधिकतर जनसंख्या का नियमित भोजन चावल, ज्वार, बाजरा और दालें थी। पेल्सर्ट के अनुसार "ये लोग मांस के स्वाद के विषय में बहुत कम जानते हैं।" जिन क्षेत्रों में धान प्रमुख फसल थी वहां की ग्रामीण जनता का प्रमुख भोजन चावल था। ऐसे क्षेत्रों में बंगाल, उडीसा, सिंध, कश्मीर, असम और दक्षिण भारत के अधिकांश भाग थे। इसी प्रकार राजस्थान और गुजरात के क्षेत्रों में ज्वार और बाजरा ज्यादा होने की वजह से यहां की ग्रामीण जनता ज्वार और बाजरा का प्रयोग खाने में करती थी। सतीश चन्द्र के अनुसार "ऐसा प्रतीत होता है कि आगरा और दिल्ली के प्रमुख गेहूँ उत्पादक क्षेत्रों में भी गेहूँ आम जनता का मुख्य भोजन नहीं था।"

ग्रामीण जनता अनाज के अतिरिक्त फलियों और सब्जियों का भी सेवन करती थी। बंगाल और उड़ीसा के तटीय क्षेत्रों में मछली काफी लोकप्रिय थी। परन्तु गोमांस का सेवन अच्छा नहीं समझा जाता था। गांव के अत्यधिक निर्धन वर्ग के लोगों को उबले चावल, मोटे अनाज और घास-पात पर ही निर्भर रहना पड़ता था। अधिकांश ग्रामीण जनसंख्या अधिकतर दिन में केवल एक बार ही नियमित भोजन करती थी। साधारणतया यह सुबह या दोपहर में होता था। संध्या के समय केवल कुछ हल्का फुल्का खाने को मिलता था।

विशेष ध्यान देने की बात है कि अधिकांशतया उत्तर भारत, बंगाल और पश्चिम भारत में भोजन में घी का नियमित प्रयोग होता था। प्रसिद्ध बंगाली कवि मुकुंदराम दही, दूध और खांड (गुड़) से बनने वाले कई

स्वादिष्ट खाने की वस्तुओं का वर्णन करता है जो गरीब लोग विवाह या अन्य उत्सवों पर खा पाते थे। गांवों में गुड़ का उपयोग आमतौर पर होता था।

बोध प्रश्न 1

1) मध्यकालीन भारत में ग्रामीण समाज की संरचना की विवेचना कीजिए।

....

....

....

....

....

2) मध्यकालीन भारत के ग्रामीण समाज के जीवन स्तर का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

27.4 सामाजिक जीवन

भारतीय गांवों के सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालने वाले स्रोतों की कमी है। समकालीन साहित्य में उपलब्ध कुछ संदर्भों तथा कुछ ऐतिहासिक स्रोतों में मिली जानकारी के आधार पर मध्यकालीन गांवों के सामाजिक जीवन की रूपरेखा तैयार की जा सकती है।

27.4.1 पारिवारिक जीवन

आप जानते ही होंगे कि परंपरागत रूप से भारत के घरेलू जीवन की एक महत्वपूर्ण संस्था संयुक्त परिवार है। एक कृषक के लिए परिवार में अधिक सदस्यों का तात्पर्य कृषि उत्पादन में सहयोग देने वाले अतिरिक्त हाथ थे जो आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था। पारिवारिक जीवन की कुछ प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार थीं :

- भारत के अधिकांश भागों में परिवार पितृसत्तात्मक थे।
- सबसे अधिक आयु का पुरुष ही परिवार का प्रमुख माना जाता था।
- परिवार के अंदर विभिन्न सदस्यों का सम्पत्ति पर व्यक्तिगत अधिकार नहीं माना जाता था। सदस्यों को अपनी गुजर-बसर के लिए सम्पत्ति की आय में से एक हिस्सा मिलता था।
- सामान्यत: परिवार की महिला सदस्यों को पुरुषों की आज्ञाओं का पालन करना होता था।
- परिवारों में कन्या की तुलना में पुत्र जन्म को अधिक महत्व दिया जाता था। सभी पुत्रों में सबसे बड़े पुत्र को अधिक महत्व प्राप्त था।

कुल मिलाकर परिवार-व्यवस्था ने एक दूसरे के साथ सहयोग की भावना और आपसी निर्भरता को विकसित किया। इससे एक विशेष प्रकार की भावना का उदय हुआ कि एक दूसरे के सहयोग के बिना जीवन कठिनाइयों से भरा होगा।

27.4.2 सामाजिक संस्थायें एवं रीति-रिवाज

ग्रामीण समाज में विवाह सबसे महत्वपूर्ण संस्था थी। पुत्र और पुत्रियों के विवाह का उत्तरदायित्व मुख्यत: मां-बाप पर था। विवाह की कोई निर्धारित आयु नहीं थी परन्तु कम उम्र में विवाह करने को पसंद किया जाता था। अबुल फजल के कथन के अनुसार अकबर ने विवाह के लिए एक निश्चित आयु निर्धारित की जो लड़कों के लिए 16 और लड़कियों के लिए 14 वर्ष थी (**आइन-ए अकबरी**, अनुवाद एच. ब्लॉकमैन, भाग 1, पृ. 195) परन्तु यह कह पाना मुश्किल है कि इस नियम का पालन पूर्णतया होता था या नहीं। मगर समकालीन साहित्य में विवाहों के विषय में दी गई जानकारी को देखें तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह नियम केवल कागज तक सीमित था और व्यवहार में इसका पालन नहीं होता था। ग्रामीण समाज के मुस्लिम और गैर-मुस्लिम संप्रदायों में विवाह की अलग-अलग प्रथायें प्रचलन में थीं। उदाहरण के लिए हिन्दुओं में विवाह एक परम संस्कार माना जाता था। जबकि मुस्लमानों में यह एक सामाजिक अनुबंध था। हालांकि दोनों ही स्थितियों में (हिन्दू तथा मुस्लिम) महिलायें अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र नहीं थीं। इसी तरह दहेज प्रथा भी दोनों ही समुदायों में एक अभिशाप की तरह मौजूद थी।

27.4.3 त्यौहार एवं मनोरंजन

ग्रामीण जनता में कई तरह के त्यौहार और मनोरंजन के साधन लोकप्रिय थे। हालांकि मुस्लिम और गैर-मुस्लिम समुदायों के अपने अलग अलग त्यौहार और उत्सव थे परन्तु यह मानना गलत होगा कि ये एक दूसरे के उत्सवों में भागीदारी नहीं करते होंगे।

हिन्दुओं के अधिकांश त्यौहार विशेष मौसमों से संबंधित थे। अधिकांशत: यह उस समय पड़ते थे जबकि कृषकों को अपने काम फुर्सत रहती थी और वे आनन्द मनाने की मनोस्थिति में होते थे। इन त्यौहारों में बसंत पंचमी, होली, दीपावली तथा शिवरात्रि प्रमुख थे। बसंत का त्यौहार बसंत ऋतु के आगमन के साथ मनाया जाता था। इसमें गाने-बजाने और नृत्य का आनन्द लिया जाता था। होली का त्यौहार रबी की फसल के तैयार होने के समय मनाया जाता था। इसे स्थान-स्थान पर अग्नि के अलाव जलाकर, लोकप्रिय गीतों को गाकर और एक दूसरे पर रंग डालकर मनाया जाता था। दीपावली, रोशनी और दीप जलाने का त्यौहार है, जिसे खरीफ फसल के काटने के बाद मनाया जाता था। शिवरात्रि प्रमुखत: एक धार्मिक त्यौहार माना जाता था, और इसे रात भर पूजा प्रार्थना के साथ मनाते थे।

इस काल तक (16 से 18वीं शताब्दी तक) मुस्लिम त्यौहार भी भारतीय वातावरण से काफी प्रभावित हो चुके थे। ग्रामीण क्षेत्रों में ईद, शबेबरात और मुहर्रम मुसलमानों के प्रमुख त्यौहार थे। इतिहासकार के. एम. अशरफ के अनुसार "संभवत: शबेबरात हिन्दुओं के शिवरात्रि त्यौहार से काफी प्रभावित था" (के. एम. अशरफ, **भारत के निवासियों का जीवन और परिस्थितियां**)। अशरफ के अनुसार "आम जनता द्वारा इस त्यौहार के मनाने की विशेषता इस अवसर पर बड़ी संख्या में आतिशबाजी का प्रयोग और घरों तथा मस्जिदों को रोशनियों से सजाना था।" ईद और शबेबरात की तुलना में मुहर्रम बहुत सादगी से मनाया जाता था। मुहर्रम के पहले दस दिन इमाम हुसैन की शहादत से संबंधित वृतांतों को पढ़ने और गाने में गुजारे जाते थे। इसके अंत में **ताजिये** (उनके मजार की अनुकृतियां), एक शोभायात्रा के रूप में निकाले जाते थे।

ग्रामीण जनसमुदायों में मनोरंजन का सर्वाधिक लोकप्रिय तरीका गाने-बजाने और नृत्यों का आयोजन था। होली जैसे त्यौहारों के अवसर पर गांव के चौक या चौपाल में लोग जमा होते थे और यहां लोकप्रिय गाथागीत और लोकनृत्य होते थे।

बोध प्रश्न 2

1) ग्रामीण स्तर पर प्रचलित परिवार व्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं का विवरण कीजिए।

....

....

....

....

....

2) ग्रामीण भारत में कौन-कौन सी प्रमुख प्रथायें, त्यौहार और मनोरंजन के साधन प्रचलित थे?

....

....

....

....

....

27.5 सारांश

इस इकाई में हमने ग्रामीण समाज की संरचना की एक रूपरेखा प्रस्तुत की है। ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर, खान-पान तथा आवास और रहन-सहन की चर्चा की है। सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों, जैसे परिवार, सामाजिक संस्थायें और प्रथायें, त्यौहार तथा मनोरंजन के साधनों के विषय में भी जानकारी दी गई है।

27.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 27.2

2) देखें भाग 27.2 तथा उपभाग 27.3.1, 27.3.2, तथा 27.3.3

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 27.4 तथा उपभाग 27.4.1

2) देखें भाग 27.4 तथा उपभाग 27.4.2 तथा 27.4.3